सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूपों का अध्ययन एवं विश्लेषण: विशेष संदर्भ रूमटेक एवं इनचे मठ

Study and Analysis of the Theatrical Dance Forms Prevalent in the Buddhist Monasteries of Sikkim: Special Reference Rumtek and Enchey monastery

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अंतर्गत एम.फिल. प्रदर्शनकारी कला विभाग (नाटक एवं फ़िल्म)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध सार

सत्र 2016-17

निदेशक
डॉ. ओम प्रकाश भारती
विभागाध्यक्ष
प्रदर्शनकारी कला विभाग

प्रस्तुतकर्ता
शैंकी जैन
एम.फिल.
प्रदर्शनकारी कला विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित हिन्दी विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, पोस्ट: हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धा-442005 (महाराष्ट्र), भारत

प्रस्तुत शोध 'सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूपों का अध्ययन एवं विश्लेषण: विशेष संदर्भ रूमटेक एवं इनचे मठ' में सिक्किम के एतिहासिक, भौगौलिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का परिचय देते हुए सिक्किम के प्रमुख बौद्ध मठों एवं इनमें प्रस्तुत होने वाले नृत्य नाट्य रूपों का विस्तृत वर्णन है।

सिक्किम का प्रारंभिक इतिहास 13 वीं शताब्दी से आरंभ होता है जब लेप्चा प्रमुख थेकोंग-थेक और तिब्बत के राजकुमार खे-भूमसा के बीच उत्तरी सिक्किम में काब लुंगत्सोक में भाईचारे के एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इसके बाद सन 1641 में तिब्बत के सम्मानित लामा संतों ने पश्चिमी सिक्किम के युकसाम प्रांत की ऐतिहासिक यात्रा की, जहां उन्होंने खे-हूमसा के छठी पीढ़ी के वंशज फुंत्सोग नामग्याल राजवंश का उदय हुआ। समय के बदलाव के साथ सिक्किम लोकतांत्रिक प्रक्रिया से गुजरा और 1975 में वह भारतीय संघ का अभिन्न अंग बन गया। गुरु पद्मसंभव ने अपने तिब्बत प्रवास के दौरान इस स्थान को आशीर्वाद दिया था। सिक्किम में सभी समुदायों के लोग आपसी सद्भवाव से रहते हैं। सिक्किम में भिन्न-भिन्न मतों से जुड़े लोग हैं और शायद यह भारतीय संघ में सांप्रदायिक सद्भाव और मानवीय संबंधों को बढ़ावा देने वाला सर्वाधिक शांति वाला राज्य है जिसकी भारत जैसे बहुसामाजिक व्यवस्था वाले देश में नितांत आवश्यकता भी है।

सिक्किम राज्य के कई नाम हैं। लेप्चाओं के द्वारा इसे न्ये-माए-एल कहा जाता है जिसका मतलब है 'स्वर्ग', लिम्बू समुदाय के लोग इसे 'सू खिम' कहते हैं जिसका मतलब होता है 'नया घर'। और भूटिया समुदाय के लोग इसे 'बेयमुल' कहते हैं।

सिक्किम में विविध समुदाय के लोग रहते हैं, प्रत्येक समुदाय अपने क्षेत्र की निष्पादन कलाओं में अपना योगदान दे रहा है । सबसे पहले 'लेपचा' जाति के लोग आकर सिक्किम में बसे । उसके पश्चात्

'भूटिया' आए जो तिब्बत और भूटान से आए, जो प्राचीन बसने वाले लोगों के वंशज हैं और अंत में नेपाली आए जो नेपाल से आकर सिक्किम में बस गए। इनमें से प्रत्येक का सामाजिक अथवा धार्मिक उत्सव लोक गीतों तथा नृत्यों के लिए रंगपटल भिन्न है।

सिक्किम का प्रमुख बौद्ध मठ पेलिंग में स्थित पेमायांत्से है। इसके अलावा यहां पश्चिमी सिक्किम ताशिदिंग मठ भी है, जो सिक्किम के सभी मठों में सबसे पवित्र माना गया है। सिक्किम का सबसे प्राचीन मठ युकसोम है, जिसे ड्रबडी मठ के नाम से जाना जाता है। यह लहातसुन चेन्पों (सिक्किम के प्रमुख संत) का व्यक्तिगत आश्रम था जो संभवत: 1700 ईसवी में बना था। कुछ अन्य मठों का नाम हैं - फोडोंग, फेन्सांग, रुमटेक, नगाडक, तोलुंग, आहल्य, त्सुकलाखांग, रालोंग, लाचेन, एन्चेय।

सिक्किम के प्रमुख मठों दो प्रमुख एवं चर्चित नाम है रूमटेक एवं एंचेय।

'एंचेय मठ' गंगटोक के प्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। यह मठ पूजा का बहुत ही पवित्र और सुंदर स्थान है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, यह मठ जो बौद्ध धर्म के वज्रयना न्यिन्गमा समाज के अंतर्गत आता है, एक ऐसे स्थान में मौजूद है, जिस पर लामा द्रुपथेब करपो का आशीर्वाद बरसता है। 'एंचेय मठ' का अर्थ है- 'एकान्त मठ' और इसके अतिरिक्त एक और कथन है कि यह जगह हमारी रक्षा करने वाले देवताओं 'कांगचेन्डजोंगा' और 'याबडियान' की उपस्थिति के लिए पवित्र है। यह मठ हर साल कुछ महत्वपूर्ण त्यौहार मनाता है, जैसे- 'डेटोर चाम/ चाम नृत्य महोत्सव', 'सिंघे चाम' और 'पंग लभसोल'।

रुमटेक मठ जिसे धर्मचक्र केंद्र के नाम से भी जाना जाता है, भारत का सबसे बड़ा बौद्धिक मठ है, जिसकी यात्रा पर आप एक बार ज़रूर ही जाएँ। तीर्थस्थान होने के साथ साथ, यह स्थान समुद्री तल से 5000 फीट पहाड़ पर गंगटोक के तरफ फेस करके बसा है। एक सोने का स्तूप मठ के अंदर ही स्थापित है

जिसमें 16वें कर्मापा के अवशेष हैं। इस पूरे मठ के परिसर में एक तीर्थ मंदिर, एक मुख्य मठ, एक रिट्रीट केंद्र, एक संरक्षक मंदिर, भक्तीनों के लिए धर्मशाला, मठवासियों के लिए विद्यापीठ, और कुछ प्रतिष्ठानों के लिए कई संस्थाएँ भी हैं।

रुमटेक में, हर महीने, एक या दो सप्ताह के लिए आयोजित एक पूजा समारोह है। तिब्बती नव वर्ष दिवस, लॉसर, बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। लामो के प्रदर्शन के साथ अगले दो दिनों तक उत्सव जारी रहता है। हालांकि, लॉसर के उत्सव से पहले, मठ के भिक्षुओं ने महाकाल के सम्मान में एक सप्ताह तक पूजा की। लॉसार की पूर्व संध्या पर पीते हुए पिछले दो दिनों में रितिक नृत्य होते हैं हाल ही में, मठ के इतिहास में पहली बार, सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए नृत्य का प्रदर्शन खोला गया था। चौथे तिब्बती माह (मई-जून) के दौरान पारंपरिक चाम प्रदर्शनों के साथ एक हफ्ते भर वाले वजीराकिलया (दुबेचेन) या गुरु पद्मशंभव त्च्छू पूजा के साथ हर वैकल्पिक वर्ष का आयोजन किया जाता है। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा हर साल 26 जून को कर्मम्पा के जन्मदिन को कम करने के लिए भी प्रदर्शन किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में सिक्किम के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए सिक्किम के बौद्ध मठों, प्रशासनिक व्यवस्था एवं उत्सवों पर प्रकाश डाला गया है। शोध में विशेष तौर पर सिक्किम के प्रसिद्ध रुमटेक एवं एंचेय मठ में होने वाले नृत्य प्रदर्शन पर प्रकाश डाला गया है। इन मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्य के अभिनय, मुखौटे, वेशभूषा को प्रस्तुत किया गया है।

शोध के पहले अध्याय **'प्रस्तावना एवं साहित्य पुनरावलोकन'** में शोध का स्वरूप एवं शोध विषय से संबन्धित पुस्तकों, आलेखों इत्यादि को प्रस्तुत किया गया है।

शोध के दूसरे अध्याय **'सिक्किम के बौद्ध स्थापत्य एवं संगठन'** में सिक्किम के एतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए सिक्किम के प्रमुख बौद्ध मठों, नृत्यों, उत्सवों का परिचय दिया गया है। अध्याय में सिक्किम के बौद्ध मठों के परिचय के साथ उनके वास्तुकला, स्वरूप इत्यादि को भी रेखांकित किया गया है।

शोध के तीसरे अध्याय **'सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रचलित नाट्य-नृत्य रूप (अभिनय पद्धति, वेषभूषा, मुखौटे'** में सिक्किम के बौद्ध मठों में प्रस्तुत होने वाले नृत्यों, उनके स्वरूप, उद्भव, अभिनय, वेषभूषा एवं मुखौटे इत्यादि पर प्रकाश दाल गया है। सिक्किम के बौद्ध मठों में सिंह चाम, ब्लैक हेट, स्केलटन चाम इत्यादि नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं।

शोध के चौथे अध्याय **'बौद्धकला दर्शन तथा बौद्ध नाट्य रूप'** में बौद्ध धर्म के इतिहास, दर्शन एवं कला रूप पर प्रकाश डाला गया है इसके साथ ही बुद्धिष्ट रंगमंच के इतिहास एवं इसके स्वरूप पर विस्तार से चर्चा है।

प्रस्तुत शोध के प्रश्नों एवं परिकल्पना को उद्देश्य के अनुरूप निष्कर्ष तक पहुंचाने हेतु सिक्किम के बौद्ध मठों विशेष तौर पर रूमटेक एवं एंचेय बौद्ध मठ के लामा से बातचीत की गयी वहाँ के स्वरूप एवं नृत्य नाट्य रूप संबंधी जानकारी एकत्रित की गयी, जिससे विस्तृत जानकारी उपलब्ध हो सके।

यह शोध इस क्षेत्र में नवीन कार्य है अतः यह शोध इस विषय से संबंधित आगे होने वाले अकादमिक शोध कार्यों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण साबित होगा।

-शैंकी जैन